इकाई 10 औद्योगिक विकास और स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 1951-65 के दौरान औद्योगिक विकास
  10.2.1 समग्र विकास स्वरूप
  10.2.2 विविधिकरण और क्षेत्रगत वृद्धि
10.3 1966-79 के दौरान मंदन
  10.3.1 1960 के दशक के मध्य के बाद औद्योगिक गत्यावरोध
  10.3.2 औद्योगिक गत्यावरोध के कारण
10.4 विगत् बीस वर्षों में औद्योगिक वृद्धि
  10.4.1 1980 के दशक के दौरान औद्योगिक पुनरुद्धार
  10.4.2 सुधार पश्चात् अवधि (1991-2000) में वृद्धि
10.5 सारांश
10.6 शब्दावली
10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें और संदर्भ
10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

10.0 उद्देश्य

इस इकाई में स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक विकास के स्वरूप का लेखा-जोखा दिया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 1960 के दशक के मध्य तक के औद्योगिक विकास को समझ सकेंगे;
- उसके पश्चात् के मंदन और गत्यावरोध को समझ सकेंगे; और
- सुधार अवधि के दौरान हुए औद्योगिक विकास के स्वरूप को समझ सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

सतत् आर्थिक विकास और समृद्धि के लिए औद्योगिक संरचना के विविधिकरण के साथ घरेलू उद्योगों का तीव्र औद्योगिक विकास अनिवार्य है। इसे पहली पंचवर्षीय योजना (1951-55) से ही स्वीकार किया गया था और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में औद्योगिक नीति का लक्ष्य निर्धारित कर दिया था। किंतु नियोजन के पचास वर्षों बाद भी, यद्यपि कि भारत ने अत्यन्त ही विविधिकृत औद्योगिक संरचना का निर्माण कर लिया है किंतु वृद्धि-दर के स्तर और समय बीतने के साथ इसके स्थायित्व दोनों के संबंध में विकास कार्य निष्पादन में काफी कुछ किए जाने की आवश्यकता है। पहली पंचवर्षीय योजना से लेकर 1990 के दशक के आरम्भ में सुधारों और संरचनात्मक समायोजन की अवधि के दौरान विकास के तीन चरणों को चिन्हित किया जा सकता है : 1960 के दशक के मध्य तक तीव्र विकास, उसके पश्चात् गत्यावरोध जो 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध तक जारी रहा; और 1980 के दशक में औद्योगिक पुनरुद्धार। बेहतर औद्योगिक कार्यनिष्पादन पर से नीतिगत

विघ्नों को दूर करने के उद्देश्य से विनियमों में ढील देने और उदारीकरण के बावजूद भी इस शताब्दी के अंतिम दशक में, विशेषकर 1996 के पश्चात् औद्योगिक विकास अपेक्षाकृत चक्रीय रहा है।

10.2 1951-65 के दौरान औद्योगिक विकास

इस भाग में 1951-65 के दौरान औद्योगिक विकास पर चर्चा की गई है। इस अवधि के दायरे में भारत की प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाएँ आती हैं और इसकी विशेषता भारत में सुदृढ़ औद्योगिक आधार का निर्माण करना था। बाद के दो उपभागों में औद्योगिक कार्य निष्पादन पर, समग्र विकास स्वरूप और औद्योगिक संरचना के विविधिकरण की दृष्टि से विचार किया गया है।

10.2.1 समग्र विकास स्वरूप

इस अवधि के दौरान रहे समग्र औद्योगिक विकास को तालिका 10.1 में दर्शाया गया है। इस अवधि के दौरान वृद्धि-दर अत्यन्त ही आकर्षक रही और प्रतिवर्ष यह दर 7.6 प्रतिशत के आस-पास रही। इस अवधि के अंतिम पाँच वर्षों, विशेषकर तीसरी योजना अवधि (1961-65) के दौरान वृद्धि-दर उल्लेखनीय रूप से अधिक 9 प्रतिशत प्रतिवर्ष थी। किंतु इतने सराहनीय कार्य निष्पादन के बावजूद भी, पहली पंचवर्षीय योजना को छोड़ कर, वास्तव में प्राप्त औद्योगिक वृद्धि-दर लक्षित वृद्धि-दर को नहीं प्राप्त कर सकी। यह वास्तव में भारत में नियोजन के पूरे पचास वर्षों के दौरान औद्योगिकरण की विशेषता रही है।

तालिका 10.2 में औद्योगिक समूहों के शुद्ध मूल्य-योजित संवर्धित (N.V.A.) और शुद्ध निर्गत मूल्य (NVO) को दर्शाया गया है। एन वी ए में वृद्धि-दर की गणना दो आरम्भिक अवधियों एक 1956-57 में और दूसरा 1959-60 में की गई है। आरम्भिक अवधि के ऐसे चयन के निरपेक्ष, विद्युत ने सर्वाधिक वृद्धि-दर दर्ज किया जबकि खनन् और पत्थर तोड़ना तथा विनिर्माण क्षेत्र में भी न्यूनाधिक इतनी ही वृद्धि-दर थी। विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत, जिन उद्योगों में एन वी ए और एन वी ओ दोनों

तालिका 10.1 : औद्योगिक उत्पादन वृद्धि-दर

पंचवर्षीय योजना/अवधि	वृद्धि-दर	
	लक्ष्य	वास्तविक
I 1951-52 से 1955-56	7.0	7.3
II 1956-57 से 1960-61	10.5	6.6
III 1961-62 से 1965-66	11.0	9.0

स्रोत : आर्थिक सर्वेक्षण

में उद्योग के औसत से दोगुनी वृद्धि-दर देखी गई। वे थे फुटवियर, मूल धातु, ग़ैर-विद्युत और विद्युत-चालित मशीनें। इतना ही नहीं, यदि आरंभिक वर्ष के रूप में 1956-57 के स्थान पर 1959-60 को लिया जाए तो मूल धातुओं को छोड़कर, इन उद्योगों की वृद्धि-दर अधिक थी। इसका अभिप्राय यह हुआ कि 1960 के दशक में वृद्धि-दर में बढ़ोत्तरी हुई।

तालिका 10.2

उद्योग समूहों की वृद्धि-दर : शुद्ध मूल्य योजित और शुद्ध निर्गत मूल्य

कूट (code)	उद्योग समूह	शुद्ध योजित मूल्य		शुद्ध निर्गत मूल्य
		1956-57 से 1965-66	1959-60 से 1965-66	1959-60 से 1965-66
1	खनन् और पत्थर तोड़ना	7.3	7.3	7.8
5	विद्युत और गैस	9.6	9.3	-
2	विनिर्माण (योग)	6.9	7.6	8.4
20	खाद्य बीवरेज (पेय़ पदार्थों को छोड़कर	2.0	0.7	4.6
21	बीवरेज	5.1	9.3	9.2
22	तम्बाकू	3.2	1.5	1.8
23	वस्त्र	2.3	3.9	6.0
24	फुटवियर	10.0	15.3	17.3
25	काष्ठ और कॉर्क	10.4	1.1	5.7
26	फर्नीचर और फिक्सचस्र	8.9	11.7	12.6
27	कागज़ और कागज़ के उत्पाद	12.3	11.4	12.5
28	मुद्रण और प्रकाशन	7.0	6.8	7.5
29	चर्म और फर उत्पाद	2.0	0.5	0.4
30	रबर उत्पाद	7.9	4.6	8.6
31	रसायन और रसायन उत्पाद	12.6	10.7	13.6
32	पेट्रोलियम उत्पाद	-2.9	-5.9	6.2
33	अधातु खनिज उत्पाद	8.7	7.0	9.2
34	मूल धातु	15.5	15.0	12.8
35	धातु उत्पाद	12.0	12.0	12.4
36	ग़ैर विद्युत मशीनें	15.9	17.9	18.9
37	विद्युत मशीनें	13.1	14.7	15.7
38	परिवहन उपकरण	7.2	10.3	10.8
39	प्रकीर्ण	10.2	14.2	10.9
	उद्योग	**7.1**	**7.6**	**8.4**

स्रोत : आई.जे. अहलूवालिया, 1985

धातु उत्पादों, परिवहन उपकरणों, रसायन उत्पादों, बीवरेज और कागज़ तथा कागज़ उत्पादों ने भी समग्र उद्योग वृद्धि-दर से काफी अधिक वृद्धि-दर दर्ज किया। दूसरी ओर, खाद्य, तम्बाकू, काष्ठ और कॉर्क, रबर उत्पाद और चर्म जैसे उद्योगों में, आरंभिक वर्ष का चयन अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। कॉलम 2 और 3 में दिए गए वृद्धि आँकड़ों में तुलना करने से पता

चलता है कि 1960-65 में उनका कार्य निष्पादन विशेष रूप से खराब रहा था। इससे यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि इन उद्योगों में 1956-59 के दौरान वार्षिक वृद्धि-दर 1956-65 के दौरान औसत वार्षिक वृद्धि-दरों से काफी अधिक थी।

10.2.2 विविधिकरण और क्षेत्रगत वृद्धि

पहली योजना के आरम्भ के समय, भारत में औद्योगिक विकास मुख्य रूप से उपभोक्ता वस्तु क्षेत्र तक ही सीमित था। सूती वस्त्र, चीनी, नमक, साबुन, चमड़े की वस्तुएँ और कागज़ महत्त्वपूर्ण उद्योग थे। कोयला, इस्पात, विद्युत, अलौह धातु और रसायन जैसे मध्यवर्ती उत्पादों का उत्पादन करने वाले उद्योगों की उत्पादक क्षमता अत्यन्त ही कम थी जबकि पूँजीगत वस्तुओं का उत्पादन शुरू ही हुआ था।

दूसरी योजना से, पी.सी. महालानोबिस के प्रभाव के अन्तर्गत, भारी उद्योगों के विकास के माध्यम से आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया था। मशीन टूल्स उद्योगों, हैवी इलैक्ट्रिकल्स, मशीन निर्माण और अन्य हैवी इंजीनियरिंग उद्योगों की स्थापना के लिए बड़े कदम उठाए गए। रसायनों के उत्पादन में भारी वृद्धि के साथ-साथ नए रसायनिक उत्पादनों के प्रचलन से रसायन उद्योग का अत्यन्त तीव्र गति से विकास हुआ। धातु-आधारित और परिवहन उपकरण उद्योगों में भी तेज़ी से वृद्धि हुई, जबकि रसायन आधारित उद्योगों में 1956-60 के दौरान प्रतिवर्ष लगभग 9 प्रतिशत की सतत् दर से वृद्धि दर्ज की गई। परिणामस्वरूप, उपभोक्ता वस्तु क्षेत्र के सापेक्षिक महत्त्व में तीव्र गिरावट हुई थी। औद्योगिक योजित मूल्य में इसका हिस्सा 1956 में 48.4 प्रतिशत से गिरकर 1960 में 37.2 प्रतिशत रह गया।

तालिका 10.3

औद्योगिक निर्गत का क्षेत्रफल वार्षिक वृद्धि-दर (%)

	1951-55	1955-60	1060-65
उपयोग आधारित वर्गीकरण			
बुनियादी वस्तुएँ*	3.8	12.0	10.5
पूँजीगत वस्तुएँ	15.1	13.7	19.7
मध्यवर्ती वस्तुएँ	6.4	6.2	7.0
उपभोक्ता वस्तुएँ			
गैर-टिकाऊ	3.7	3.8	3.8
टिकाऊ	12.3	25.5	10.8
आदान आधारित वर्गीकरण			
कृषि आधारित	3.6	3.6	3.8
धातु आधारित	10.9	14	18.3
रसायन आधारित	8.1	9.7	9.0
परिवहन उपकरण	11.1	10.5	14.7
विद्युत और सम्बद्ध	8.5	16.0	14.7

स्रोत : केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन; भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन
*इसके अंतर्गत खनिज, सीमेंट, भारी रसायन, धातु और विद्युत सम्मिलित हैं।

आप खंड 1, इकाई 3 में उद्योगों के वर्गीकरण के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। तालिका 10.3 में उस अवधि के लिए उपयोग आधारित और आदान आधारित वर्गीकरण के आधार पर औद्योगिक निर्गत की क्षेत्रगत वार्षिक वृद्धि-दर दी गई हैं। तालिका 10.3 के निचले आधे भाग में उद्योगों के आदान आधारित वर्गीकरण के अनुसार क्षेत्रगत वृद्धि दर्शाई गई है। कृषि आधारित उद्योगों की वृद्धि न्यूनाधिक एक समान दर पर हुई है। दूसरी ओर तीन योजना अवधियों के दौरान धातु आधारित उद्योगों और पहली दो योजना अवधियों के दौरान विद्युत की औसत वृद्धि-दर में बराबर वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप, 1951-65 के दौरान इन उद्योगों के प्रति उद्योगों की संरचना में भारी परिवर्तन हुआ।

बोध प्रश्न 1

1) पहली तीन पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान औद्योगिक वृद्धि का सामान्य स्वरूप क्या रहा था?

.....

.....

.....

.....

.....

2) 1951-65 के दौरान औद्योगिक वृद्धि कितनी विविधिकृत थी?

.....

.....

.....

.....

.....

3) सही उत्तर पर (√) निशान लगाएँ :

क) आदान-आधारित उद्योगों में से किन उद्योगों ने न्यूनाधिक स्थिर वृद्धि-दर दर्शाया था,

i) कृषि आधारित
ii) धातु आधारित
iii) परिवहन उपकरण
iv) रसायन आधारित

ख) औद्योगिक वृद्धि का लक्षित स्तर इसके दौरान प्राप्त किया जा सका,

i) पहली पंचवर्षीय योजना
ii) दूसरी पंचवर्षीय योजना
iii) तीसरी पंचवर्षीय योजना
iv) दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजना दोनों

10.3 1966 और 1979 के दौरान मंदन

1960 के दशक के मध्य से, समग्र और क्षेत्रगत दोनों दृष्टियों से भारतीय उद्योगों में वृद्धि-दर काफ़ी धीमी हो गई। जहाँ, भारी उद्योग जैसे मशीनें, परिवहन उपकरण और बुनियादी धातु, में

गति काफी धीमी हो गई, वहीं हल्के उद्योग जैसे खाद्य विनिर्माण और वस्त्र कभी भी गति नहीं पकड़ सके। इस प्रकार, मंदता और धीमी वृद्धि दोनों बातें एक साथ मौजूद थीं।

1960 के दशक के मध्य में, दो बार भारी सूखा पड़ा था जिसका सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा इसके साथ-साथ विदेशी सहायता में भी भारी गिरावट आई। पाकिस्तान के साथ लड़ाई छिड़ने के साथ, बजट की भी कमी हो गई थी। इन सबने विकास प्रक्रिया को मंद कर दिया।

इस भाग में हम औद्योगिक गत्यावरोध के स्वरूप और इसके संभावित कारणों पर चर्चा करेंगे।

10.3.1 1960 के दशक के मध्य के पश्चात् औद्योगिक गत्यावरोध

1965-76 की अवधि के दौरान औद्योगिक वृद्धि-दर में तीव्र गिरावट आई और यह तीसरी योजना (1961-65) के दौरान प्रतिवर्ष 9 प्रतिशत की तुलना में प्रतिवर्ष मात्र 4.1 प्रतिशत रह गई। इस अवधि के दौरान वार्षिक वृद्धि-दर, यदि 1976-77 जिसमें वृद्धि-दर में 10.6 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि हुई थी, को छोड़ दें तो, यह और घटकर 3.7 प्रतिशत प्रतिवर्ष रह गई थी।

तालिका 10.4 में प्रभावित उद्योगों में मंदता प्रक्रिया के विस्तार को दर्शाया गया है। कागज़ और

तालिका 10.4

औद्योगिक मंदता : शुद्ध योजित मूल्य

कोड (code)	उद्योग समूह	शुद्ध योजित मूल्य		
		1956-57 से 1965-66	1966-67 से 1979-80	1966-67 से 1981-82
1	खनन् और पत्थर तोड़ना	7.3	3.0	3.3
5	विद्युत और गैस	9.6	8.9	8.7
2	विनिर्माण (योग)	6.9	5.5	5.3
25	काष्ठ और कॉर्क	10.4	5.4	3.8
26	फर्नीचर और फिक्सचस्र	8.9	6.3	5.2
27	कागज़ और कागज़ उत्पाद	12.3	7.2	6.2
28	मुद्रण और प्रकाशन	7.0	1.7	1.8
30	रबर उत्पाद	7.9	4.2	4.1
31	रसायन और रसायन उत्पाद	12.6	9.1	7.9
33	अधात्विक खनिज उत्पाद	8.7	3.0	3.0
34	बुनियादी धातु	15.5	5.1	5.0
35	धातु उत्पाद	12.0	2.5	2.6
36	ग़ैर विद्युत मशीनें	15.9	7.5	7.0
37	विद्युत मशीनें	13.1	9.8	9.4
38	परिवहन उपकरण	7.2	4.6	4.6
	उद्योग	7.1	5.5	5.4

स्रोत : आई.जे. अहलूवालिया, 1985

कागज़ उत्पादों, रबर उत्पादों, ग़ैर-धातु खनिज उत्पादों, मूल धातुओं और धातु, उत्पादों में कार्य निष्पादन सबसे खराब रहा।

विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत, वस्त्र और खाद्य विनिर्माण में मंदन की स्थिति नहीं देखी गई। इन उद्योगों ने न तो आरंभिक अवधि में तीव्र विकास किया था और न ही 1960 के दशक की अवधि के बाद उन्होंने मंदी देखी। वस्त्र में वृद्धि-दर जो विनिर्माण में कुल योजित मूल्य का 20 प्रतिशत थी, वास्तव में 1956-65 के दौरान 2.3 प्रतिशत प्रतिवर्ष से 1966-79 के दौरान 4.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक साधारण वृद्धि दर्ज की गई थी। तथापि, यह दर उस अवधि के लिए औद्योगिक क्षेत्र की औसत वृद्धि से काफी कम थी। खाद्य विनिर्माण उद्योग में हर वर्ष घट-बढ़ होती रही। किंतु कुल मिलाकर इसमें काफी धीमी वृद्धि देखी गई।

दूसरी ओर खनन् और पत्थर तोड़ने तथा विद्युत का एक दूसरे से और विनिर्माण क्षेत्र से बिल्कुल भिन्न व्यवहार रहा। खनन् जिसका उद्योग में योजित मूल्य में 9 प्रतिशत के लगभग हिस्सा था, में 1956-65 के दौरान प्रति वर्ष 7.3 प्रतिशत की वृद्धि-दर में तीव्र गिरावट आई और बाद की अवधि के दौरान 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक घट गया। विद्युत और गैस जिसका योजित मूल्य में खनन् और पत्थर तोड़ने के बराबर ही हिस्सा था, में औसत वार्षिक वृद्धि-दर में अत्यंत अल्प गिरावट दिखाई पड़ी।

इस समय उद्योग में संरचनात्मक ह्रास भी व्याप्त था जिसने उद्योग को प्रभावित किया। इस अवधि के दौरान पूँजीगत वस्तु उद्योगों में मात्र 2.6 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि हुई जबकि दूसरी और तीसरी योजना अवधियों में क्रमश: 13.1 प्रतिशत और 19.6 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि हुई थी। बुनियादी उद्योगों की स्थिति भी ऐसी ही है। वस्तुत:, दीर्घकालीन औद्योगिक विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अधिकांश उद्योगों की भी यही कहानी रही है। बुनियादी वस्तुओं में, खनन् और मूल धातुओं ने अपनी वृद्धि-दर में तीव्र गिरावट दर्शाई। वहीं दूसरी ओर सीमेण्ट की वृद्धि-दर भी घटती-बढ़ती रही।

टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ ही एकमात्र श्रेणी थी जिसमें यद्यपि तीव्र वृद्धि हुई थी, इसके फर्नीचर और फिक्सचस्र सेक्टर (तालिका-10.4) को छोड़कर मंदी नहीं देखी गई। इसके साथ ही ग़ैर टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ जैसे वस्त्र बुनाई और खाद्य विनिर्माण अपनी धीमी-वृद्धि-दर पर बढ़ते रहे जबकि इसमें अत्यधिक तेज़ी अथवा मंदी नहीं देखी गई।

10.3.2 औद्योगिक गत्यावरोध के कारण

औद्योगिक वृद्धि में मंदी की विवेचना के लिए अनेक अनुमान लगाए गए हैं। माँग पक्ष अनुमान के अनुसार कृषि द्वारा इसके विभिन्न अग्रानुबंधों के माध्यम से उद्योग को जबर्दस्ती चलाते रहना, आय वितरण का और बदतर हो जाना, आयात प्रतिस्थापन्न और सार्वजनिक निवेश का धीमा पड़ना है। दूसरी ओर, आपूर्ति पक्ष अनुमान के अनुसार अर्थव्यवस्था के अंदर और बाहर दोनों ओर से प्रतिस्पर्धा का कम हो जाना है।

कृषि औद्योगिक वृद्धि को मुख्यत: तीन प्रकार से प्रभावित करती है : (i) उपभोक्ता वस्तुओं जैसे खाद्य के आपूर्तिकर्ता के रूप में; (ii) कृषि-आधारित उद्योगों के लिए कच्चेमालों के संभरक के रूप में; और (iii) कृषि आय के सृजनकर्त्ता के रूप में जो औद्योगिक वस्तुओं के लिए माँग पैदा करती है। यह अनुमान कि 1960 के दशक के दौरान उपभोक्ता-वस्तु बाधाओं के अंतर्गत उद्योग ने कार्य किया, एक युक्तियुक्त स्पष्टीकरण नहीं है क्योंकि इसका तात्पर्य श्रम-गहन हल्के उद्योगों में मंदी आना होगा। किंतु इसके बदले, भारी उद्योगों में मंदता देखी गई। औद्योगिक वृद्धि संबंधी

कृषि सामग्री बाध्यताएँ सिर्फ कृषि आधारित उद्योगों से संबंधित हैं जिसमें निर्गत मूल्य की दृष्टि से प्रतिवर्ष 5 से 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यद्यपि कि वाणिज्यिक फसलों के निर्गत वृद्धि में महत्त्वपूर्ण रूप से मंदी आई थी, यह कृषि आधारित उद्योगों की वृद्धि में मंदी से संबद्ध नहीं था। तीसरा अनुबंध स्वीकार्य स्पष्टीकरण हो सकता है हालाँकि यह ध्यान रखना होगा कि कृषि आय में धीमी वृद्धि के बावजूद भी जिस वृद्धि-दर को प्राप्त किया जा सकता था औद्योगिक वृद्धि-दर उससे भी कम रहा।

आय वितरण के अनुचित होने के प्रतिकूल प्रभाव का अनुमान (i) माँग के स्वरूप, (ii) माँग के स्तर पर इसके प्रभाव पर आधारित है। तथापि, इशर अहलूवालिया (1985) ने यह तर्क दिया कि ऐसे बहुत कम प्रमाण हैं जिनसे या तो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में उपभोग अथवा आय में असमानता में वृद्धि अथवा समय बीतने के साथ ग्रामीण निर्धनता में वृद्धि का पता चलता है। इतना ही नहीं, यदि यह कारण था तो उपभोक्ता वस्तुओं में वृद्धि सबसे ज्यादा प्रभावित होती जबकि वस्तुस्थिति ऐसी नहीं थी।

सार्वजनिक निवेश औद्योगिक वृद्धि को दो तरह से प्रभावित करता है। यह पूँजीगत वस्तुओं के लिए माँग पैदा करता है और आधारभूत संरचना बाधाओं को दूर करता है जिससे चतुर्दिक औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। तथापि, इसका ह्रासकारी प्रभाव है जिसके द्वारा सार्वजनिक निवेश में वृद्धि औद्योगिक वृद्धि को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है क्योंकि इसका अर्थ निजी निवेश के लिए ऋण योग्य निधियों का कम उपलब्ध होना है। नि:संदेह, सार्वजनिक निवेश में गिरावट आई और ऐसे निवेश पर आधारित उद्योगों की वृद्धि पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। तथापि, इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि सार्वजनिक निवेश में समग्र वृद्धि नहीं हुई थी। अपितु आधारभूत संरचना में अधिक निवेश हुआ था। इसने निश्चित तौर पर 1960 के दशक के मध्य के बाद औद्योगिक वृद्धि को रोके रखा।

अर्थशास्त्रियों में औद्योगिक वृद्धि में नीतिगत बाधाओं के संबंध में बहुत हद तक आम सहमति है। औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति और व्यापार नीति दोनों ही तीव्रतर वृद्धि के लिए अनुकूल नहीं थे। आयात प्रतिस्थापन्न को कुशलता पूर्वक आगे बढ़ाने में और वह भी लम्बे समय तक, भारतीय नीतियाँ असफल रहीं। बहुधा, देशी क्षमता की स्थापना को ही आयात प्रतिस्थापन के लिए पर्याप्त आधार माना जाता था और लागत तथा गुणवत्ता पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसके परिणामस्वरूप संरक्षण की आड़ में उच्च-लागत औद्योगिक संरचना का विकास हुआ। औद्योगिक नीति के विभिन्न तत्वों का समग्र प्रभाव यह हुआ कि इसने उत्पादकता में वृद्धि अथवा घटकों के उपयोग में कुशलता को बाधित किया। अधिकांश उद्योग समूहों में "पूर्ण उपादान उत्पादकता" का योगदान नगण्य था अथवा यहाँ तक कि नकारात्मक था।

बोध प्रश्न 2

1) क्या आप समझते हैं कि 1960 के दशक के मध्य के पश्चात् औद्योगिक वृद्धि में मंदी आई?

.....

.....

.....

.....

.....

2) औद्योगिक गत्यावरोध के विभिन्न संभव कारणों की पहचान कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सही उत्तर पर (√) निशान लगाइए :

क) विनिर्माण क्षेत्र जिसकी वृद्धि-दरों में मंदन नहीं देखी गया वे थे,

i) खाद्य और वस्त्र

ii) रबर उत्पाद और कागज़ उत्पाद

iii) काष्ठ और कॉर्क

iv) बुनियादी धातु और धातु उत्पाद

ख) कृषि औद्योगिक वृद्धि को इस रूप में प्रभावित करता है,

i) उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्तिकर्त्ता के रूप में,

ii) कृषि आधारित उद्योगों को आदान का आपूर्तिकर्त्ता;

iii) आय का सृजनकर्त्ता जो औद्योगिक वस्तुओं के लिए माँग पैदा करता है

iv) उपर्युक्त सभी।

10.4 विगत् बीस वर्षों में औद्योगिक वृद्धि

1980 के दशक के आरम्भ से एक बार पुन: वृद्धि-दर में बढ़ोतरी हुई और उस पूरे दशक में कुछ हद तक उद्योगों का पुनरुद्धार हुआ। 1990 के दशक के आरम्भ में, सुधार कार्यक्रमों और व्यापार उदारीकरण के माध्यम से काफी हद तक औद्योगिक वृद्धि संबंधी नीतिगत बाधाएँ हटा दी गई। इसने वृद्धि-दर को अत्यधिक तेज कर दिया यद्यपि ऐसा अत्यन्त ही सीमित अवधि 1992-96 के लिए ही हुआ। इस भाग में पुनरुद्धार की अवधि (1981-90) और सुधार-पश्चात् अवधि के दौरान वृद्धि के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

10.4.1 1980 के दशक के दौरान औद्योगिक पुनरुद्धार

1980 के दशक के पूर्वार्द्ध अर्थात् छठी योजना अवधि के दौरान औद्योगिक वृद्धि प्रतिवर्ष 6.4 प्रतिशत थी और दशक के उत्तरार्द्ध के दौरान बढ़ कर 8.5 प्रतिशत हो गया। यह मंदन के चरण से पहले अंतिम पाँच वर्षों के दौरान की उपलब्धि के लगभग बराबर था। यहाँ से देश में नई औद्योगिक युग का सूत्रपात होता है।

विनिर्माण क्षेत्र और उसके सभी 'उपयोग आधारित क्षेत्रों' (Use based sectors) में योजित मूल्य में तीव्र गति से वृद्धि के पूर्वार्द्ध में, विनिर्माण में योजित मूल्य में वृद्धि 7.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से हुई थी जबकि 1966-67 से 1979-80 की अवधि में मात्र 4.7 प्रतिशत से 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक वृद्धि हुई थी। वर्ष 1981-1985 के दौरान बुनियादी वस्तुओं में वृद्धि 8.7 प्रतिशत प्रतिवर्ष हुई थी जबकि पूँजीगत वस्तु और मध्यवर्ती वस्तु दोनों क्षेत्रों में वृद्धि प्रतिवर्ष लगभग 6 प्रतिशत रही थी। 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में, बुनियादी वस्तुओं जिनकी वृद्धि-दर में मामूली गिरावट दर्ज की गई को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों के वृद्धि-दर में तीव्रता आई।

औद्योगिक पुनरुद्धार का मुख्य कारण घरेलू औद्योगिक नीति की पुन:संरचना, प्रक्रियाओं का

सरलीकरण, बेहतर प्रौद्योगिकी की सुगमतापूर्वक उपलब्धता, मध्यवर्ती वस्तुओं का आसानी से आयात और अधिष्ठापित क्षमता के उपयोग में अधिक नम्यता था। परिणामस्वरूप कारकों की उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई। वस्तुत: जैसा कि अहलूवालिया द्वारा भी नोट किया गया, 1980 के दशक के दौरान पुनरुज्जीवित वृद्धि-दरों का महत्त्वपूर्ण पहलू यह नहीं था कि यह आदानों के वृद्धि के त्वरण से सम्बद्धित था अपितु यह बेहतर उत्पादकता और कार्यनिष्पादन पर आधारित था। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि कुल उपादान उत्पादकता में 1966-67 से 1979-80 के दौरान प्रतिवर्ष -0.2 से -0.3 की नकारात्मक वृद्धि-दर रही थी में 1981-85 के दौरान काफी सुधार हुआ और वृद्धि-दर बढ़ कर प्रतिवर्ष 3.4 प्रतिशत हो गई।

आधारभूत संरचना के सार्वजनिक निवेश में फिर से वृद्धि हुई। 1979-80 से 1984-85 के दौरान इसमें प्रतिवर्ष 9.7 प्रतिशत वृद्धि हुई थी, 1985-86 में यह वृद्धि 16 प्रतिशत थी जबकि 1965-66 से 1975-76 के दौरान इसमें प्रतिवर्ष मात्र 4.2 प्रतिशत प्रतिवर्ष वृद्धि दर्ज हुई थी। सार्वजनिक कार्यों पर भी सरकारी व्यय में भारी वृद्धि हुई थी जिससे टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं के माँग में वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप 1981-85 के दौरान टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं में प्रतिवर्ष 14.3 प्रतिशत और 1985-90 के दौरान प्रतिवर्ष 11.6 प्रतिशत वृद्धि देखी गई थी।

10.4.2 सुधार पश्चात् अवधि (1991-200) में वृद्धि

1990 के दशक के आरम्भ में, भारतीय अर्थव्यवस्था की पुन:संरचना के उद्देश्य से सुधार कार्यक्रमों के समपूरक भाग के रूप में औद्योगिक क्षेत्र में कुछ महत्त्वपूर्ण नीति परिवर्तन शुरू किए गए। इसमें प्रवेश बाधाओं, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के विनिवेश और निजीकरण, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति का उदारीकरण, पूँजी और मध्यवर्ती वस्तुओं के संबंध में आयात नीति का उदारीकरण सम्मिलित है।

सुधारों के पहले दो वर्षों, 1991-92 और 1992-93 में वृद्धि-दर अत्यन्त ही कम थी। किंतु अगले तीन वर्षों में वृद्धि-दर में काफी वृद्धि हुई। उद्योग में, कुल मिलाकर, 1994-95 और 1995-96 में क्रमश: 8.4 और 12.7 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि-दर रिकार्ड की गई थी (तालिका 10.5)। विनिर्माण क्षेत्र में भी वृद्धि की दर इतनी ही थी जबकि विद्युत क्षेत्र में इस अवधि के दौरान प्रतिवर्ष 8 प्रतिशत के लगभग वृद्धि-दर देखी गई। बुनियादी और मध्यवर्ती वस्तु क्षेत्रों में मिलाजुला रुख रहा जबकि पूँजीगत वस्तु और उपभोक्ता वस्तु क्षेत्रों में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। बुनियादी वस्तुओं में, सीमेण्ट उद्योग की वृद्धि अत्यन्त ही आकर्षक थी। विशेषकर तब जबकि इसकी वृद्धि-दर 1991-92 में 9.8 प्रतिशत से गिरकर 1992-93 में 1 प्रतिशत रह गई थी।

तथापि, नब्बे के दशक के उत्तरार्ध में वृद्धि-दर में अपेक्षाकृत उतार-चढ़ाव रहा। समुच्चय और क्षेत्रगत स्तरों दोनों पर, पहली बार 1996-97 और उसके बाद फिर 1998-99 के दौरान माँग के अभाव के कारण वृद्धि-दरों में मंदी आ गई। इन वर्षों में खनन् और पत्थर तोड़ने के क्षेत्र में इन दोनों वर्षों में नकारात्मक वृद्धि-दर दर्ज की गई। दूसरी ओर, विनिर्माण क्षेत्र में, निर्गत वृद्धि में स्पष्ट अधोमुखी प्रवृत्ति तब तक थी जब तक कि 1999-2000 में इसमें स्वयं वृद्धि होना शुरू नहीं हो गया। तथापि, इसकी वृद्धि-दर अभी भी 1995-96 के चरम स्तर से काफी कम रही है।

तालिका 10.5

वार्षिक वृद्धि : सुधार पश्चात अवधि (प्रतिशत परिवर्तन)

	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98	1998-99	1999-00
खनन्	0.6	0.5	3.5	7.6	9.5	-1.9	5.6	-1.8	1.0
विनिर्माण	-0.1	2.2	6.1	8.5	13.8	6.7	6.6	4.1	7.1
सती वस्त्र	-1.0	4.9	9.1	1.1	11.7	13.0	6.8	-	-
उर्वरक	-1.1	-6.6	15.3	8.0	7.9	-1.6	17.1	-	-
सीमण्ट	9.8	1.0	7.2	7.6	10.9	9.6	9.2	-	-
इस्पात	5.5	3.3	0.0	9.4	15.8	1.3	1.8	-	-
विद्युत	8.5	5.0	7.5	8.5	8.1	3.9	6.9	6.5	7.3
बुनियादी वस्तुएं	6.4	2.7	9.5	5.5	8.3	8.1	7.0	1.6	-
पूंजीगत वस्तुएं	-12.1	4.0	-4.2	24.8	17.9	5.9	-4.0	10.2	-
उपभोक्ता वस्तुएं	-2.2	5.1	3.9	8.7	13.3	4.1	4.6	2.2	-
मध्यवती वस्तुएं	-1.4	4.6	11.8	3.7	10.9	9.8	6.9	6.0	-
उद्योग	0.6	2.3	6.0	8.4	12.7	5.6	6.6	4.5	6.7

स्रोत : सेंटर फॉर मोनिटरिंग इंडियन इकॉनामी, मासिक बुलटिन

उपयोगिता आधारित वर्गीकरण में, बुनियादी और मध्यवर्ती वस्तुओं की वृद्धि-दर में 1995-96 में क्रमश: 8.3 प्रतिशत और 10.9 प्रतिशत से सतत् गिरावट आई, जो 1998-99 में क्रमश: 1.6 प्रतिशत और 6 प्रतिशत रह गई। उपभोक्ता वस्तु और पूँजीगत वस्तु क्षेत्रों में वृद्धि-दर अपेक्षाकृत घटती-बढ़ती रही। यहाँ यह नोट करना उल्लेखनीय होगा कि पूँजीगत वस्तु क्षेत्र में 10.2 प्रतिशत वृद्धि-दर दर्ज की गई जो उद्योग की औसत वृद्धि-दर 4.5 प्रतिशत से काफी अधिक था।

औद्योगिक वृद्धि में मंदी का कारण कुल माँग की वृद्धि में कमी और विश्व व्यापार में समग्र मंदी के कारण गिरती हुई निर्यात वृद्धि थी। पूर्वी एशियाई देशों में भारी अवमूल्यन के कारण भारतीय निर्यात का कम प्रतिस्पर्धी रह जाना भी इसका एक मुख्य कारण था। पूर्ति पक्ष में, 1990 के दशक के मध्य में क्षमता में वृद्धि और माल के भण्डार में वृद्धि के कारण कारपोरेट क्षेत्र द्वारा कम निवेश और पूँजी बाज़ार, प्राथमिक और द्वितीयक दोनों, में सतत् निष्क्रियता के कारण निधियों का प्रवाह बंद हो जाना था।

बोध प्रश्न 3

1) 1980 के दशक में औद्योगिक पुनरुद्धार के कारण बताइए। (एक वाक्य में उत्तर दें)।

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि 1990 के दशक के आरम्भ में आर्थिक सुधारों के कारण औद्योगिक वृद्धि में अस्थायी तेज़ी आई?

.....

.....

.....

.....

.....

3) सही उत्तर पर (√) निशान लगाइए :

क) सातवीं योजना अवधि के दौरान औद्योगिक वृद्धि थी।

i) 6.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष

ii) 7.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष

iii) 6 प्रतिशत प्रतिवर्ष

iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं

ख) 1996-97 के पश्चात् औद्योगिक वृद्धि में मंदी का कारण कहा जा सकता है :

i) आदान की कम उत्पादकता

ii) समुच्चय माँग की वृद्धि में मंदी

iii) सार्वजनिक निवेश में ह्रास

iv) उपर्युक्त सभी।

10.5 सारांश

भारत में, पहली तीन पंचवर्षीय योजना अवधियाँ (1951-65) औद्योगिक वृद्धि के लिए तेज़ी वाले वर्ष थे। तथापि, आकर्षक वृद्धि-दरों के बावजूद, पहली पंचवर्षीय योजना को छोड़ कर, वास्तव में प्राप्त वृद्धि-दर कभी भी लक्षित वृद्धि-दर को नहीं छू सका। वास्तव में यह नियोजन के पूरे पचास वर्षों में औद्योगिकरण की विशेषता रही है।

उस अवधि के दौरान औद्योगिक संरचना पर्याप्त रूप से विविधिकृत थी। दूसरी योजना अवधि से, उपभोक्ता वस्तुओं के आयात में तेज़ी से गिरावट आई। दूसरी ओर, रसायनों के उत्पादन में भारी वृद्धि और नए रासायनिक उत्पादों के पेश किए जाने से रसायन उद्योग का तेज़ गति से विकास हुआ। धातु आधारित और परिवहन उपकरण उद्योगों का भी तेज़ी से विकास हुआ।

1960 के दशक के मध्य से, भारतीय उद्योगों में समग्र और क्षेत्रगत दोनों में वृद्धि-दर में भारी कमी आई। उद्योग में संरचनात्मक ह्रास हुआ। जहाँ भारी उद्योग जैसे मशीनों, परिवहन उपकरण और बुनियादी धातुओं में भारी मंदी आई, वहीं हल्के उद्योग जैसे खाद्य विनिर्माण और वस्त्र कभी भी गति नहीं पकड़ सके। इस प्रकार मंदन और धीमी वृद्धि दोनों विद्यमान थी। किंतु वस्त्र और खाद्य विनिर्माण ने इस अवधि में न तो कभी गति पकड़ी और न ही इसमें मंदी आई।

कृषि आय में गिरावट, आधारभूत संरचना में सार्वजनिक निवेश की कमी और संरक्षणात्मक व्यापार के कारण प्रतिस्पर्धा की कमी और औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति, बताए गए अनेक अनुमानों में से सर्वाधिक युक्तिसंगत और अनुभव सिद्ध स्पष्टीकरण प्रतीत होते हैं।

1980 के दशक के आरम्भ से, एक बार पुन: वृद्धि-दरों में बढ़ोत्तरी शुरू हुई और कुछ हद तक पूरे दशक में उद्योग का पुनरुद्धार हुआ। 1990 के दशक के आरम्भ में, सुधार कार्यक्रमों और व्यापार उदारीकरण द्वारा बहुत हद तक औद्योगिक वृद्धि में नीतिगत अड़चनों को हटा दिया गया था। इससे वृद्धि-दरों में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई, अलबत्ता ऐसा अत्यन्त ही कम अवधि अर्थात् 1992-96 के दौरान ही हुआ। तथापि, 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध में, वृद्धि-दरों में अपेक्षाकृत उतार-चढ़ाव होता रहा था। समुच्चय और क्षेत्रगत स्तरों दोनों पर, पहली बार 1996-97 के दौरान और एक बार फिर 1998-99 के दौरान वृद्धि-दरों में गिरावट आई थी।

10.6 शब्दावली

हासमान प्रभाव (Crowding Out) : सरकारी व्यय अथवा निवेश में वृद्धि होने से ब्याज दर बढ़ती है, परिणामस्वरूप ग़ैर सरकारी (निजी) निवेश हतोत्साहित होता है क्योंकि उधार लेने की लागत बढ़ जाती है। इस प्रकार सार्वजनिक निवेश ग़ैर सरकारी (निजी) निवेश को बाहर (कम) कर देता है।

आयात प्रतिस्थापन्न : आयात की जाने वाली वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा में

देश में ही उत्पादन करके आयात का प्रतिस्थापन्न करना।

ऋण योग्य निधियाँ : उधार और निवेश के लिए निधियों की पूर्ति

पूर्ण उपादान उत्पादकता : उत्पादन के आर्थिक सिद्धान्त से पता चलता है कि योजित मूल्य की वृद्धि-दर और कुल आदान फलन की वृद्धि-दर के बीच मुख्य रूप से अंतर है।

योजित मूल्य : उपयोग किए गए कच्चे माल और अन्य एकल उपयोग आदानों में से उत्पादन का लागत निकाल देने से जो बचता है।

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ

अहलूवालिया, आई.जे. (1985). *इण्डस्ट्रियल ग्रोथ इन इंडिया : स्टैगनेशन सिन्स मिड सिक्सटीज,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

कपिला, उमा, (2000). *अण्डरस्टैन्डिंग दि प्रॉब्लम्स ऑफ इंडियन इकानॉमी,* एकेडेमिक फाउन्डेशन, गाज़ियाबाद।

नैय्यर, डी., (1994). *इण्डस्ट्रियल ग्रोथ एण्ड स्टैगनेशन : दि डिबेट इन इंडिया,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस : मुम्बई।

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 10.2.1 पढ़िए।

2) उपभाग 10.2.2 पढ़िए।

3) (क) (i) (ख) (i)

बोध प्रश्न 2

1) हाँ। उपभाग 10.3.1 पढ़िए।

2) उपभाग 10.3.2 पढ़िए। तीन सर्वाधिक युक्तिसंगत स्पष्टीकरण हैं : कृषि आयत में गिरावट; आधारभूत संरचना में सार्वजनिक निवेश में ह्रास; औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति और व्यापार नीति जो प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र को कम करते हैं।

3) (क) (i) (ख) (ii)

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 10.4.1 पढ़िए।

2) हाँ। उपभाग 10.4.2 पढ़िए।

3) (क) (i) (ख) (ii)